शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई–पत्रिका

अंक -3 : माह-मार्च 2023

आशीर्वाद :

प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सद्गुरु-संदेश

मेरी अपेक्षाएं

अपना यह वासुदेव कुटुंब है। इसमें सभी साधक भाई बहनों से मेरी कुछ अपेक्षाएं हैं। कुछ ऐसे कार्य जो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं और कुछ बिल्कुल अच्छे नहीं लगते उन्हें मैं अपने साधकों तक पहुंचा रही हूं।

यदि कहीं भी कोई भी साधक बीमार हो जाए या कोई समस्या आ जाए तो स्थानीय साधकों को चाहिए कि उसकी इलाज में और मुसीबत में हर तरह की सहायता करे। एक दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार बने। जो साधक बीमारी या संकट में आर्थिक सहायता लेता है उसे भी चाहिए की सुविधा होने पर वापस देने वाले को लौटा दे। यह व्यवस्था इसलिए भी जरूरी है कि लेने वाले की आदत गलत ना बने और भविष्य में भी सबको मदद मिलती रहे।

सभी साधक सद्गुरु की संतानें हैं इसलिए सब घुल मिलकर रहें। किसी के भी संबंध में ओछी बात ना तो करनी चाहिए और ना ही सोचनी चाहिए। किसी भी साधक में कोई कमी हो सकती है तो उसे हंसी की बात ना बनाकर अलग से उसे समझाना चाहिए। यह सही है कि गुण-दोष में सभी समान नहीं होते किंतु सबके साथ व्यवहार तो सम्मानजनक होना ही चाहिए।

एक और बात जो मुझे अच्छी लगती है कि साधक को अपने अलावा अन्य प्राणियों के लिए भी सोचना चाहिए। जैसे भोजन के समय गो-ग्रास एवं कौवे आदि पक्षियों के लिए भी खाने की चिंता करें। पशु-पक्षियों के लिए पीने के पानी की भी व्यवस्था होनी चाहिए। बचपन से मैं देखती रही कि लोग जगह-जगह पानी की प्याऊ लगाते थे। पानी को ठंडा रखने के लिए छाया और मटकों की व्यवस्था करते थे। उसे देख देख कर मेरे मन में बहुत प्रसन्नता और ठंडक होती थी। ऐसे कार्य भी साधक को अपनी सामर्थ्य के अनुसार करने चाहिए।

कुछ साधक ऐसे होते हैं जो कमाते तो कुछ नहीं है किंतु चालाक होते हैं। वे दूसरों की करुणा का फायदा उठाकर किसी न किसी बहाने मदद मांगते ही रहते हैं। आम साधक यह मानकर कि मेरा साधक भाई मुसीबत में है तो वे मदद कर देते हैं पर लेने वाला वापस देने की नहीं सोचता। ऐसे जब भी समस्या आती है तो अलग-अलग लोगों से मांगने का और वापस न देने का दुर्गुण उसमें आते जाता है। कई बार तो ये बातें आश्रम के ध्यान में आ जाती

है लेकिन अधिकतर चुपके-चुपके ही यह व्यवहार चलता रहता है। ऐसी घटनाएं सुनकर मन बहुत दुःखी होता है। यदि किसी साधक को बहुत जरूरत है तो वह आश्रम में सूचना कर सकता है। यदि वह अन्य साधक से चुपके से चालाकीपूर्वक कुछ मांगता है तो देने वाले को पहले आश्रम को सूचित किया जाना चाहिए।

मेरी मन की भावना तो यही है कि सब साधक प्रेम से रहें, खूब साधन करें और बुराइयों से मुक्त हों। ऐसे साधक मेरी प्रसन्नता का कारण भी बनते हैं और मुझे बहुत प्यारे भी लगते हैं।

-आपकी अपनी बा

सहज अभिव्यक्ति

संपादकीय

सद्गुरुकृपा से 'शिव-गरिमा' का तीसरा अंक आपके पास है। पहले दो अंकों के लिए आपके उत्साह एवं शुभकामनाओं के लिए आभार। जय श्री कृष्ण।

उत्सवों की रचना और उनको मनाना किसी भी परिवार को एक सूत्र में पिरोए रखते हुए उसके उत्कर्ष का सिद्ध उपाय है। हमारे गुरुदेव ने भी वासुदेव कुटुंब में अनेक उत्सवों का समावेश किया है। यद्यपि इन उत्सवों के उद्देश्य पूर्ववर्णित तक ही सीमित नहीं हैं।

जैसे महाशिवरात्रि को महोत्सव कहना ज्यादा ठीक है। यह शिव व शक्ति के मिलन का प्रतीक है। हमारी शक्तिपात परंपरा का मुख्य आधार भी शक्ति को जागृत करके शिव से संसर्ग कराना है।

श्री गुरुपूर्णिमा यूं तो वेदव्यास जी का जन्मदिन है तथा इस दिन गुरु पूजन का आयोजन होता है। हमारी परंपरा में विशद गुरु शृंखला है। हमारी श्रद्धा का केंद्र सद्गुरु है। सद्गुरु ही हमारी आध्यात्मिक उन्नति, सांसारिक प्रसन्नता तथा कल्याण की कामना का पोषक है। परमेश्वर ही सद्गुरु स्वरूप में आकर हमें ढूंढता है, जोड़ता है, प्रेरित करता है एवं अंततः गंतव्य तक पहुंचाता है।

नवरात्र पर्व तो शक्ति की साधना का ही अवसर है। नवदुर्गा के रूपों का स्तवन तथा अर्चन करते हुए साधक स्वयं में निहित शक्ति को उर्ध्व गति देने के लिए

तैयारी करते हैं। नवरात्रि में दुर्गाष्टमी का विशेष महत्व है। इस दिन जागृत हुई शक्ति जीवन में क्रांति घटित कर देती है। इस पर्व पर सरस्वती, महालक्ष्मी व महाकाली पूजते हैं।

दत्त संप्रदाय का मूल संबंध होने के नाते दत्त जयंती हमारे लिए एक विशिष्ट दिन है। भगवान दत्तात्रेय ब्रह्मा, विष्णु व महेश के संयुक्त रूप हैं। इस दिन हम उत्पत्ति, पालन व कल्याण का संयुक्त अध्याय सीख कर अपनी साधना को शीर्ष तक ले जाने की प्रेरणा लेते हैं।

वासुदेव कुटुंब में 7 जनवरी चैतन्य दिवस का भी अत्यधिक महत्व है। यह गुरुदेव प्रभु बा का दीक्षा दिवस है यानी हमारा मूल यहीं से प्रारंभ होता है। ऐसे ही 25 मई गुरुदेव का जन्मदिन है। एक आध्यात्मिक तो दूसरा भौतिक अवतरण है। यह दोनों ही हमारे आधार हैं।

इनके अलावा पार्थेश्वर पूजन, रक्षाबंधन, कृष्ण जन्माष्टमी, गणपति उत्सव, दीपावली, होली आदि पर्व भी अपने आप में उत्कृष्ट संदेश देते हैं।

ये सभी उत्सव केवल प्रचलन रूप में ही नहीं बल्कि ऊंचे लक्ष्य लिए हुए हैं। इनके पीछे निहित भावों को समझ कर ही इनका प्रभाव हम अनुभव कर सकते हैं। इसके लिए सामान्य बात तो यह है कि यथासंभव हर उत्सव पर सद्गुरु सान्निध्य पाने का प्रयास हर साधक को करना चाहिए।

आपका ही
स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

नाम जप

नाम जप भक्ति जगत की अमूल्य पूंजी है। जब से साधना की शुरुआत हुई होगी तब से नाम जप की महत्ता बनी हुई है। कई बार तो भक्ति मार्ग में यह भी कहा सुना जाता है कि 'राम से बड़ा राम का नाम' यानी कि भगवान से भी अधिक उनका नाम स्मरण सरल व ज्यादा प्रभावी है। नाम लेखन से पत्थर तैरने का उल्लेख इसी विचार का प्रमाण कहा जा सकता है। देवर्षि नारद तो प्रतिपल नाम जप करते हुए ही वर्णित होते हैं। भक्तों की परंपरा में अधिकतर भक्तों ने नाम जप के द्वारा ही अपना मनवांछित पाया है। ईश्वरीय भक्ति में नाम जप नैवेद्य की तरह है। इससे ईश्वर को प्रसन्नता होती है व जपकर्ता को आनंद का अनुभव होता है। शास्त्रों में नाम जप की महिमा विपुल स्तर पर बखानी गई है। नाम को कैसे भी जपें तो भी वह फलदाई होता है, ऐसी संतों की मान्यताएं हैं। प्राचीन काल से गुरु-शिष्य परंपरा में भी नामदान और उसके बाद उस नाम का जप ही साधन का प्रमुख भाग बताया गया है। भक्तों की आर्त पुकार को भगवान तक पहुंचाने का सिद्ध साधन नाम जप रहा है।

अपनी शक्तिपात परंपरा जो कि प्रधान रूप से ध्यान मार्ग है, उसमें भी नाम जप का बहुत महत्व है। यद्यपि नाम जप का हमारा ध्येय कुछ अर्थों में थोड़ा अलग है। हमें जो

गुरु मंत्र मिला है वही हमारा जप मंत्र भी है। उसे समय-समय पर भजना, जपना हमारा साधन संबंधी कर्म रहता ही है। इसके अलावा भी हमारे सद्गुरु परमहंस राजयोगी प्रभु बा ने नाम जप को करने की कुछ और विधियां बताई हैं। वे हैं-साधक द्वारा स्वयं जपना, समूह में 1-2 घंटे के जप, अखंड नाम संकीर्तन में 12 घंटे के जप, सद्गुरु सान्निध्य में 3 दिन एवं 7 दिन तक त्रिशक्ति एवं साप्ताहिकी में नाम जपना आदि। हम यह तो जानते हैं कि जप करना है और करते भी हैं। परंतु यह भी जानना आवश्यक है कि जप क्यों करना है? जप के द्वारा सद्गुरु हममें कौन सी गुणवत्ता लाकर परिवर्तन की प्रतीक्षा में हैं? जप क्या केवल नाम स्मरण है? क्या केवल गिनती है? केवल लयबद्ध गान ही है या इससे आगे भी कुछ और है?

हमारी साधन परंपरा में नाम जप का अति महत्व है। नाम जप सांसों की लय को साधता है। नाम जप करने से हृदय में निर्मलता आती है। अष्ट सात्विक भावों के उदय का योग बनता है तथा नाड़ी शुद्धि की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। नाड़ी शुद्धि यानी पूर्व के जितने भी कर्मबंध हैं, विचारों का जमघट है, उनसे मुक्त होने की दिशा में बढ़ते कदम। जब मानसिक शुद्धता व्याप्त होने लगती है तो सद्गुरु द्वारा बताई गई ध्यान विधि कारगर होने लगती है। शून्यावस्था के लिए गहरा ध्यान आवश्यक है। गहरे ध्यान के लिए नाड़ी शुद्धि आवश्यक है और नाड़ी शुद्धि के लिए नाम जप। अतः जप यानी किसी फल-फूल वाले पौधे के लिए उपयुक्त भूमि की तैयारी। उस भूमि से कंकर-पत्थर तथा घासफूस को निकाला जाकर उसे उपजाऊ बनाया गया है। इसलिए हमारी पद्धति में नाम जप पर विशेष आग्रह है और विशेष बात है कि यह गुरु परंपरा का आदेश भी है।

प्रभु बा का अनुभव

प्रतीकात्मक चित्र

बात तब की है जब मैं लगभग तेरह वर्ष की थी। मेरी शादी तय हो चुकी थी तथा घर में इससे संबंधित तैयारियां चल रही थीं। इससे पहले मेरे मामा श्री लीला राम जी की शादी होनी थी। आजी (मेरी मां) मेरी शादी की तैयारियों में व्यस्त थी इसलिए ऐसा सोचा गया कि मुझे तीन महीने पहले ही मामा की शादी के लिए भेज दिया जाए। आजी ठीक शादी के समय ही पहुंच पाएगी। तब हम यवतमाल में रहते थे। मामा की शादी में जाने से पहले पास में ही एक स्थान पर दर्शन करने गए। यह स्थान खटेश्वर बाबा के नाम से प्रसिद्ध है। यहां रहने वाले संत हर समय खाट पर ही रहते थे इसलिए स्थान का नाम भी खटेश्वर धाम हो गया था। तब वहां एक छोटा सा मंदिर था और पास में ही एक कुंड बना हुआ था। कुंड के चारों ओर सीढ़ियां बनी हुई थी तथा आठ-दस सीढ़ियां नीचे ही पानी भरा हुआ था। हम सपरिवार वहां गए हुए थे। कई लोग वहां पर पहले से थे जो भजन गा रहे थे, पूजा कर रहे थे और मालाएं की कर रहे थे। मैं भी आजी के पास बैठी थी। उनकी आदत थी कि वे मुझे कहीं जाने नहीं देती थी पास

ही बिठाए रखती थी। उनका बड़ा अनुशासन था। बैठे-बैठे मेरे मन में न जाने क्या आया कि मैं चुपके से आजी के पास से उठी और दौड़कर कुंड पर चली गई। सीढ़ियां उतरकर आखिरी सीढ़ी पर बैठ गई और पांव पानी में लटका दिये। खूब मजा आ रहा था। बैठे-बैठे मेरा मंत्र जाप भी चालू था। कुछ समय पहले ही एक मंदिर में संत बाबा जी के ऊपर गिरने के कारण कुपित होकर उन्होंने कान पर एक थप्पड़ जड़ दिया था जिसके कारण वह मंत्र सतत गूंजने लगा था। वही मंत्र जपते-जपते न जाने में कहां पहुंच गई कुछ भी मालूम नहीं था। इतने में मुझे नीला प्रकाश दिखाई दिया। प्रकाश कहीं हल्का था तो कहीं गहरा। जैसे स्याही में कलम डुबोकर कोई शब्द लिखें तो पहले गहरा रंग आता है और बाद में हल्का होता जाता है ठीक वैसे ही। मुझे पूरा होश था तथा आंखें भी खुली हुई थी। धीरे-धीरे आंखें बंद होने लगी। तभी कुंड के पानी में से बीचों-बीच एक शिवलिंग निकला। उस शिवलिंग की ऊंचाई करीब दो-सवा दो फुट होगी तथा वह चिकने पत्थर का ना होकर प्राकृतिक खुरदरे पत्थर का बना हुआ था। वह शिवलिंग पानी की सतह पर आकर ठहरा गया। तभी मुझे लगा कि किसी ने मेरे सिर पर थपकी मारी है। मेरी आंखें

प्रतीकात्मक चित्र

खुल गई और मैंने देखा की पानी की सतह पर सुंदर सा शिवलिंग था। बहुत ही रम्य दर्शन था। मेरी खुशी का ठिकाना न था। तभी अचानक डबुक की आवाज आई और वह शिवलिंग वापस पानी में समा गया। बहुत देर तक तो मैं अवाक सी बैठी रही। धीरे-धीरे खुमारी सी छाने लगी और मैं अचेत हो गई। इतने में आजी ढूंढते हुए वहां आ पहुंची और मुझे उठाया। मेरी दशा देखकर वे नाराज सी हो गई और मारा भी। कहने लगी कि तू जहां भी जाती है ऐसा ही करती है। मुझे वे मंदिर के पास लेकर आए और लोग सामूहिक जप करने लगे। धीरे-धीरे मैं उस भाव दशा से बाहर आई और सामान्य हो गई। उस समय तक मेरी दीक्षा भी नहीं हुई थी। वह अनुभव बड़ा रोमांचक रहा।

प्राणं देहं गेहं राज्यं, स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिं।
भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं।।

सामान्यतः व्यक्ति को सबसे अधिक प्रिय हैं अपने प्राण। प्राण पर संकट हो तो व्यक्ति सबसे पहले उसके निवारण का ही उपाय करता है। शरीर की रक्षा भी प्राणिमात्र का सहज कर्म है। घर, सत्ता, स्वर्ग, भोग, योग, पति-पत्नी, ईष्ट, पुत्र तथा मित्र ये सब या तो जीवन में लक्ष्य रूप में आते हैं या लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग करने हेतु। जीवन को सुखी व प्रसन्न बनाने में इनकी उपयोगिता परिलक्षित होती भी है।

पर क्या आत्मरक्षा, शरीर-पोषण, स्वर्ग-प्राप्ति या अपनों का साथ यही सब जीवन का ध्येय है या और भी कुछ? एक दृष्टि से तो यह सब गौण हैं, मुख्य बात तो आत्म कल्याण ही है। मुख्य पुरुषार्थ वही है जो खुद को समझने में सहयोग करता है तथा अपने मूल से साक्षात्कार कराता है। उसे ही जीवन का ध्येय कहा जा सकता है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि तो केवल और केवल गुरुकृपा से ही संभव है। अतः उपर्युक्त सभी सिद्धियां या प्राप्तियां कभी भी गुरु से अधिक महत्व की नहीं हैं। गुरु का स्थान इनसे अनंत गुणा श्रेष्ठ व उच्च है, उनसे अधिक कुछ नहीं।

– वृहत विज्ञान परमेश्वर तंत्रः त्रिपुरा शिव संवाद

आश्रम-सेवा

सद्गुरु ने हमें साधन का मार्ग बताया है, उस मार्ग पर चलने की विधि बताई है, चलने की शक्ति दी है। यह उनकी करुणा व कृपा है। किसी साधक में उस मार्ग के प्रति जिज्ञासा जगी तो सद्गुरु ने अपने सारे अनुभव, अपनी सारी क्षमता उस साधक के कल्याण हेतु लगाने का संकल्प ले लिया। यह कार्य एक तरफा तो श्रेष्ठता से हो गया। दूसरी तरफ साधक के रूप में शिष्य का कर्तव्य है कि वह निर्देशित साधन को नियमपूर्वक करे। हालांकि इसमें भी केवल साधक का ही हित है। साधक सद्गुरु ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता क्योंकि उनका उपकार इतना भव्य व दिव्य है कि उसके बदले साधन करने के अलावा उसके पास और है भी क्या? फिर भी हर साधक का मन होता है कि ऐसे ईश्वरीय उपकार के बदले कुछ तो मैं भी करूं! यह भाव ही आश्रम-सेवा को साकार रूप देने का अवसर होता है।

हम आश्रम में जाते हैं तो वहां की अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं हैं। स्वच्छता, अन्नपूर्णा से जुड़े कार्य, साज-सज्जा, भजन-पूजन, आपस में विचारों का आदान-प्रदान, शंका-समाधान, अपना भौतिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में सहयोग आदि आश्रम सेवा के कई प्रकार हैं। हम इन सेवाओं में कहां जुड़ सकते हैं? यह हमारी रुचि, क्षमता व दक्षता पर निर्भर करता है। पहले स्वयं को तोलें कि मेरे योग्य कौनसी आश्रम सेवा है? जिस अभिरुचि का हम चयन करते हैं वह कार्य आश्रम में पहले से ही किसी न

किसी पैमाने पर, किसी न किसी के द्वारा संचालित हो रहा है। अतः संबंधित साधक-साधिका से संपर्क करके अपनी इच्छा, दिए जा सकने वाले समय की अवधि व क्षमता की चर्चा करके सौंपा गया कार्य करेंगे तो हमें भी संतोष होगा और कार्य भी अच्छे से होगा।

कभी कभी हम उत्साहित होकर या आश्रम में मुझे भी कुछ न कुछ करना चाहिए इस संकोच के कारण काम तो ले लेते हैं परन्तु अभ्यास की कमी या कार्य की गंभीरता को न समझना, कार्य को संपन्न करने की बजाय बाधित या लंबित भी कर सकता है। व्यावहारिक बात यही है कि जैसा चाहा गया हो, जितना कर सकते हों वह सेवा कार्य लेना ही उचित रहता है। आश्रम के कार्य आश्रम की तात्कालिक व दूरगामी आवश्यकताओं के अनुसार होते हैं इसलिए अपने मन की न करके संबंधित साधक-साधिका के कहे अनुसार ही करना चाहिए। हां, हम उस कार्य में अपनी दक्षता के बल पर और श्रेष्ठता ला सकते हैं तो बता कर करना ही चाहिए।

यह सेवा इसलिए भी आवश्यक है ताकि हम आश्रम को अपना घर समझ कर ही जुट जाएं। इसका बार बार अभ्यास करने का सबसे बड़ा लाभ जो कालांतर में होना है वह यह होगा कि आश्रम से लौटने पर घर भी आश्रम सा लगने व बनने लगेगा।

आश्रम सेवा भी साधना का ही एक भाग है। इससे कुटुंब भावना का विस्तार होता है तथा सहनशीलता, क्षमता का उपयोग, सामंजस्य की वृद्धि एवं अपनेपन को साकार करने का अवसर मिलता है। ये सभी सद्‌गुण ही हैं, इनका विकास साधन में सहयोगी होता ही है।

श्रीमती गायत्री जी सोनवणे, गोंदिया - महाराष्ट्र

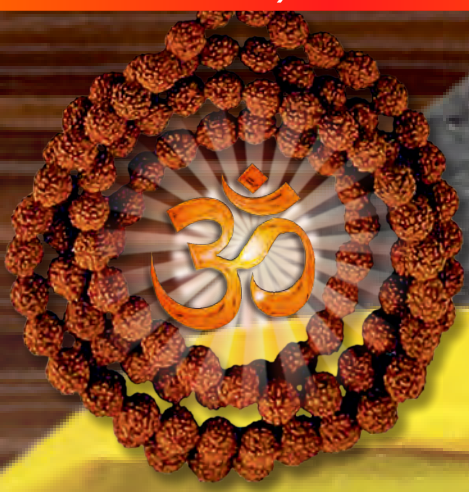

प्रश्न : सूतक एवं सोयर की अवधि एवं साधन संबंधी आश्रम के क्या नियम हैं?

उत्तर : सामान्यतः सूतक का संबंध जन्म व मरण के कारण होने वाली अशुचिता व उसके प्रभाव से है। हमारे गुरुदेव ने इसका विभाजन किया है-सूतक और सोयर में। सूतक यानी मरण के कारण हुई अशुचिता एवं सोयर यानी नये सदस्य के जन्म के कारण।

सूतक के बारे में यह नियम है कि जिस परिवार में रहते हैं उसमें संग रहने वाले किसी सदस्य का यदि देहावसान हो जाता है तो परिवारजनों को 10 दिन का सूतक रहता है। ऐसे सदस्य के देहावसान के समय यदि कोई बाहर है अथवा आश्रम में है तब भी यही नियम लगता है। सूतक काल में साधक-साधिका कहीं भी हो उन्हें आसन पर बैठकर ध्यान करना, मंदिर में पूजा करना, सार्वजनिक पानी की व्यवस्था का स्पर्श करना आदि वर्जित रहते हैं। यदि इसके स्थान पर परिवार से संबंधित व्यक्ति का देहावसान हो जाता है और जो साथ में न रहकर कहीं अन्यत्र रहते थे तो यह सूतक 3 दिन का रहता है। इसमें भी

पूर्वानुसार बताई बातों निषेध रहता है। इस प्रकार के सूतक काल में जप कर सकते हैं, सामूहिक भोजन व सत्संग में भाग ले सकते हैं बस यह ध्यान रहे कि सद्गुरु स्पर्श से दूर रहें।

सोयर का आशय घर में किसी नए जन्म से लगने वाला सूतक है। इसमें भी वही सारे नियम हैं। प्रसूता को सवा महीने बाद जप करने की छूट है किंतु सवा साल तक आसन पर ध्यान साधना से दूरी रखनी चाहिए। विवाहित साधिका के संबंध में यह ध्यान रहे कि विवाह के बाद उनका गौत्र परिवर्तित होने से उन्हें पीहर पक्ष के सूतक एवं सोयर नहीं लगते हैं। उन्हें इसमें ससुराल से संबंधित रिश्तों का ही पालन करना होता है। सूतक हो या सोयर दोनों में मंत्र जाप एवं सत्संग की अनुमति रहती है।

इस संदर्भ में यह भी ध्यान रहे कि यदि कोई साधक या साधिका विधुर या विधवा हो जाएं तो यह नियम सवा महीने का रहता है। विधवा के लिए अष्टगंध का टीका लगाने एवं मंगलसूत्र के स्थान पर तुलसी या रुद्राक्ष की माला धारण करने का प्रावधान है। पति या पत्नी यदि दोनों साधक हैं तो किसी एक के न रहने पर दूसरा उनके आसन का परस्पर उपयोग कर सकते हैं। दोनों आसनों को एक साथ मिलाकर साधन संबंधी उपयोग हो सकता है।

उपर्युक्त परिस्थितियों के अतिरिक्त यदि कोई और स्थिति आती है तो आश्रम से संपर्क करके निर्देश प्राप्त किए जा सकते हैं।

श्री प्रमोदकुमार सोनी, बदलापुर

गत दीपावली की बात है मैं शिवपुरी आश्रम में ही था। इस पर्व पर अच्छी सी रंगोली बनाने का मानस था। दो-तीन दिन पहले से ही मैं विचार कर रहा था कि रंगोली में क्या बनाऊं? बनाने का मन है किंतु कुछ भी सूझ नहीं रहा था। कई बार कई सारे आईडियाज आए पर कुछ भी तय नहीं कर पा रहा था। हर बार लगता था इससे अच्छा और क्या हो जो गुरुदेव को भी भावे और साधकों को भी रूचिकर लगे।

अगली सुबह उठा तो घड़ी देखकर लगा कि अभी तो जल्दी है। इसलिए आंखें बंद करके वापस सोने की कोशिश कर रहा था। तभी मेरे मानस में शिवपुरी के मंदिर परिसर में स्थित यज्ञ मंडप का दृश्य दिखाई दिया। उस मंडप में मुझे पादुकाओं के दर्शन हुए। इससे मन प्रफुल्लित हो उठा क्योंकि मुझे संकेत मिल गया था कि रंगोली में पादुकाएं बनाना है। उठने के बाद मैं प्रार्थना (ऑफिस) में गया और इंटरनेट से पादुकाओं की अलग-अलग बहुत सारी इमेजेस निकालीं। पर हर बार न जाने क्यों मुझे पूरी तरह संतुष्टि नहीं हुई। मुझे लगने लगा कि जो संकेत मिला है वैसी कोई इमेज मिल क्यों नहीं रही? तभी यकायक यूं ही खोजते-खोजते परमपूज्य प्रभु बा के चरणों के एक फोटो पर मैं अटक गया। उन चरण छवियों को देखकर मुझे लगा कि ऐसा ही तो कुछ बनाना था। फिर तो फोटो शॉप में कुछ एडिट करके बहुत सुंदर चरणों की छवि बन गई। वही छवि मैंने यज्ञ स्थल के पास रंगों से उकेरी तो मुझे तो संतुष्टि मिली ही पर जिसने भी दर्शन किए सबको आनंद आ गया। आदरणीय स्वामी दादा ने उसे संपूर्ण साधक समुदाय को विभिन्न ग्रुप्स के माध्यम से भेजा भी। अनेक साधकों ने उसे

सराहा। मैंने गुरुदेव को मन ही मन अहोभाव व्यक्त किया कि कितना सुंदर कांसेप्ट सुझाया और उसे साकार करने की शक्ति भी प्रदान की।

जब रंगोली बनकर तैयार हुई और जगह पर सेट कर दिया और बैकग्राउंड फ्लोर पर बना रहा था तभी कैमरे से स्वामी दादा और प्रभुबा देख रहे थे और फिर स्वामी दादा का फोन आया उन्होंने रंगोली की प्रशंसा तो की लेकिन साथ में एक निवेदन भी किया जो कि प्रभु बा की ओर से था (फिर मैंने कहा निवेदन की कोई बात नहीं है आप तो आदेश करें) कि पादुका के सामने रंगोली से फ्लोर पर दो हाथ बनाना है और उसके नीचे आओ मां ऐसा लिखना है इससे यह स्पष्ट हो गया कि सद्गुरु की दृष्टि एवं निर्देश के बिना कोई भी कार्य संपूर्ण नहीं होते और तब यह कार्य भी पूर्ण हुआ है

1. श्रीमती आभाजी पाल, रायपुर

'शिव गरिमा' का प्रवेशांक इतना अच्छा और मन को बांधने वाला है कि ऐसा लगा जैसे हम अपने सद्गुरु के सामने शिवपुरी आश्रम में ही बैठे हैं।

प्रथम ध्यान अनुभूति साझा करके सद्गुरु ने हम पर बहुत उपकार किया है। डॉ. अनंत सक्सेना का अनुभव अद्भुत है। हर एक स्तंभ बहुत रोचक और हमें अपने सद्गुरु की गहराइयों को समझने में सहायक है। बधाई एवं जय श्री कृष्ण।

2. श्री आशुतोषजी यादव, इन्दौर

डिजिटल ई पत्रिका 'शिव–गरिमा' के पहले अंक को देखा तो मन बहुत प्रसन्न हुआ। बचपन में मुझे 'शिव वाटिका', बाद में 'शिव प्रवाह' आदि का बेसब्री से इंतजार रहता था। जब इनका प्रकाशन स्थगित हुआ तो मैंने इनकी कमी हमेशा महसूस की। कालांतर में 'वागीश्वरी ब्लॉग' और अब 'शिव– गरिमा' के माध्यम से यह कमी पूर्ण होती दिखाई दे रही है। युवा पीढ़ी तक सबसे अच्छी तरह पहुंचने का माध्यम है यह ई पत्रिका।

मेरे मत से शिव–वाटिका, शिव–प्रवाह व अन्य प्रकाशनों में प्रकाशित लेख जो अध्यात्म व साधन मार्ग में आगे बढ़ने के लिए पथ प्रदर्शक हैं तथा किसी खजाने से कम नहीं है उन्हें पुनः प्रकाशित भी करना चाहिए।

इस पत्रिका में गुरुदेव का संदेश, साधकों के अनुभव, संपादकीय, साधन संपदा व संक्षिप्त समाचार एक बहुत ही अच्छा मिश्रण है। जिसे प्रोपर-मिक्स भी कहा जा सकता है।

3. श्री विजयजी बुधिया, रायपुर

पत्रिका सराहनीय है। इस पत्रिका के माध्यम से यह प्रयास भी हो सकता है कि आश्रमवासी व प्रवासी साधकों के बीच सेवा संबंधी कोई संकोच ना रहे। आश्रम हम सभी का है यह भावना ही आश्रम से गहराई तक जोड़ेगी। नए साधकों को भी आश्रम से जुड़ने का माध्यम यह पत्रिका हो सकती है। इसके लिए छोटी-छोटी किंतु व्यावहारिक बातों का भी समावेश हों जैसे-आश्रम सेवा के लिए किससे जानकारी लूं? आश्रम में जाने के बाद साधन संबंधी सूचनाएं किस से मिलेगी? साधन का सही तरीका क्या है? मेरा प्रवेश व सहयोग कहां तक अपेक्षित है? ये खुलासे भी समय-समय पर होते रहें तो लाभकारी होगा।

महाराष्ट्र के पूणे शहर मे साधिका श्रीमती अनिताजी व्हावळे के निवास स्थान पर अखंड नाम जप संकीर्तन का आयोजन हुआ।

शिव त्रिलोचन आश्रम, चपोरा ,छत्तीसगढ मे रायपूर निवासी साधक श्री भूपेशजी वाटेर द्वारा अखंड नाम संकीर्तन आयोजित किया गया।

रविवार 5 फरवरी श्री माघ पूर्णिमा की पावन तिथि पर उदयपुर के साधक श्री विनयजी एवं श्रीमती रेखाजी शर्मा के निवास स्थान पर अखंड नाम संकीर्तन का आयोजन हुआ। संध्याकाल को प्रभु बा के सान्निध्य मे इस नाम संकीर्तन का समापन हुआ।

मंगलवार 7 फरवरी की रात्रि को उदयपुर के साधक श्री लक्ष्मीलालजी व श्रीमती शीला बेन पटेल के निवास स्थान पर गुरूदेव के सान्निध्य मे सत्संग का आयोजन हुआ।

महाशिवरात्रि उत्सव शिवपुरी

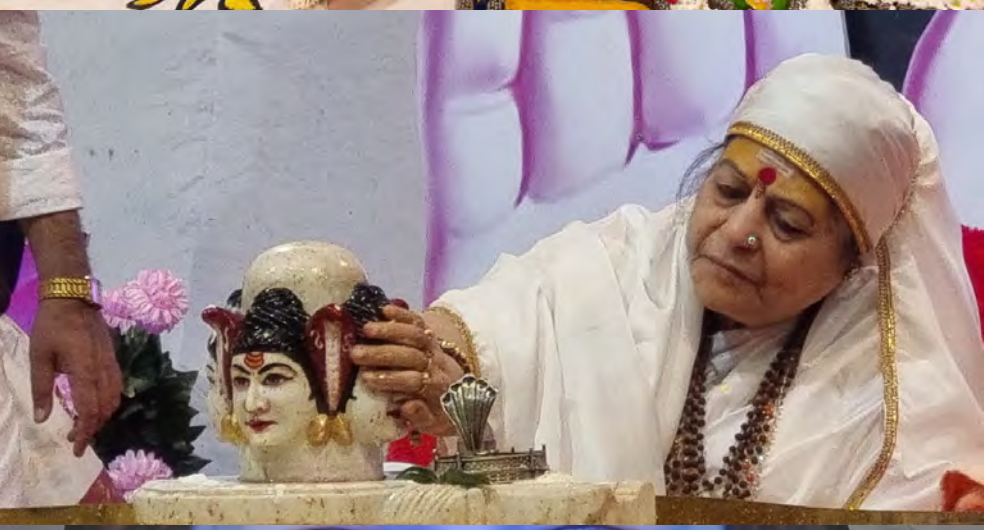

महाशिवरात्रि साप्ताह्किी

महाशिवरात्रि साप्ताहिकी

जलेश्वर महादेव का अभिषेक

सलूंबर में 25 फरवरी को श्री देवीलाल जी गोरवले के नवीन वास्तु में प्रभु बा के सान्निध्य में सत्संग

कैलिफोर्निया में श्रीमती अनुजा जी व श्री पांडुरंग जी के निवास पर रविवार 26 फरवरी को अखंड नाम संकीर्तन

ध्यातव्य : 'शिव—गरिमा' पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की अवधारणा के अधीन हैं तथा
प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही उपयोग हेतु हैं।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित काशी शिवपुरी आश्रम,
ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर, जिला—उदयपुर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव—गरिमा' ई—मासिकी, निः शुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद , मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद
एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा), ग्राफिक्स: प्रमोद सोनी
संपर्क सूत्र : आश्रम : 9929681423,
स्वामी दादा: 9950502409, संपादक : 9414740814

www.prabhubaa.com Prabhu Baa App